उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

अनुसूची में शामिल कराने के लिए मनोज... 10 | प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना: फ्री तेल, दाल... 05

जन एक्सप्रेस

janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
पृष्ठ: 13 | अंक: 83
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

लखनऊ | मंगलवार | 04 जनवरी, 2022

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। रबी फसलों में गेहूं के बाद चना की फसल को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इसके बाजार भाव भी अच्छे मिलते हैं। लेकिन सर्दियों में तापमान कम रहने से फसलों में कीट लगने की संभावना रहती है। यदि समय पर फली छेदक कीट का नियंत्रण नहीं किया गया तो चने की पूरी फसल चौपट हो जाती है। यह बातें सोमवार को सीएसए के वैज्ञानिक डॉ राम सिंह उमराव ने कही। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कीट विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर एवं कीट वैज्ञानिक डॉ राम सिंह उमराव ने किसानों के लिए चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फली छेदक कीट हरे रंग का होता है जो बाद में भूरे रंग का हो जाता है। शुरुआत में यह कीट चने की पत्तियां खाता है इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दाने को खोखला कर देती है। इसके नियंत्रण के लिए उन्होंने बताया कि जनवरी फरवरी के महीने में खेत में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगा दें। साथ ही जैविक नियंत्रण के लिए 50 प्रतिशत फसल में फूल आने पर नीम का तेल 700 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। डॉक्टर उमराव ने रासायनिक नियंत्रण के लिए बताया कि एण्डोक्साकार्ब 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। जिससे कि चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाया जा सके।

वर्ष 16 अंक 04 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, मंगलवार 04 जनवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं किसान : डॉ. राम सिंह उमराव

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कीट विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर एवं कीट वैज्ञानिक डॉ राम सिंह उमराव ने किसानों के लिए चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं एडवाइजरी जारी की है।उन्होंने बताया कि सर्दियों में तापमान कम रहने से फसलों में कीट लगने की जगह संभावना रहती है। यदि समय पर फली छेदक कीट का नियंत्रण नहीं किया गया तो पूरी फसल चौपट हो जाती है।उन्होंने बताया कि रबी फसलों में गेहूं के बाद चना की सबसे महत्वपूर्ण फसल माना गया है।इसके बाजार भाव भी अच्छे मिलते हैं।उन्होंने बताया की फली छेदक कीट हरे रंग का होता है जो बाद में भूरे रंग का हो जाता है। शुरुआत में यह कीट चने की पत्तियां खाता है इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दाने को खोखला कर देती है। इसके नियंत्रण

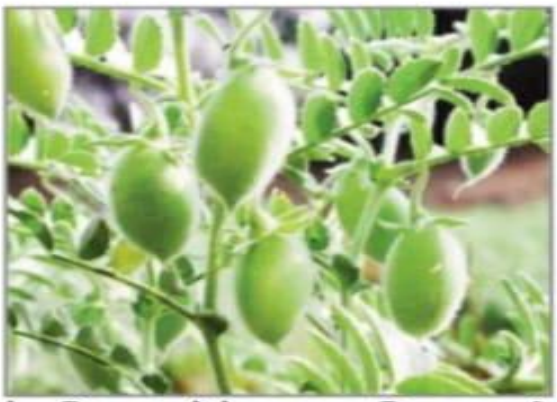

के लिए उन्होंने बताया कि जनवरी फरवरी के महीने में खेत में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगा दें। साथ ही जैविक नियंत्रण के लिए 50त्न फसल में फूल आने पर नीम का तेल 700 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। डॉक्टर उमराव ने रासायनिक नियंत्रण के लिए बताया कि एण्डोक्साकार्ब 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।जिससे कि चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाया जा सके।

सोमवार
कानपुर, 3 जनवरी 2022

देश में कोरोना के मामलों में भारी उछाल

नई दिल्ली, 2 जनवरी। देश में तीसरी लहर की आशंका के बीच एक दिन कोरोना के नए मामलों में भारी उछाल आया है। पहले राजधानी दिल्ली में पिछले 24 घंटों के अंदर 3,194 नए मामले सामने आए हैं। राजधानी में कोरोना के कुल सक्रिय मामले अब 8,397 हो गए हैं। जिनमें से 307 मरीज अस्पतालों में भर्ती हैं। 94 मरीजों को आईसीयू सपोर्ट पर रखा गया है जबकि चार मरीज वेंटिलेटर पर हैं। वहीं, महाराष्ट्र में भी कोरोना के मामलों में उछाल देखा जा रहा है। रविवार को महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में कोरोना वायरस के 8063 नए मामले दर्ज किए गए।

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश
e-paper: www.vyaparsandesh.com

टमाटर के खेत में खरपतवार नहीं होने दें : डॉ. अनिल

कानपुर, 2 जनवरी (निस)। सीएसए की प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि टमाटर कि नवंबर माह में नर्सरी लगाई जाती ह जबकि माह जनवरी में रोपाई होती है उन्होंने कहा इस समय किसान भाई प्रत्येक 10 दिन बाद हल्की सिंचाई करते रहें। टमाटर के खेत में खरपतवार बिल्कुल नहीं होने दे। इन्हें समय-समय पर निकालते रहें। पुरानी फसल में यदि फल छेदक का संक्रमण हो जाए तो खराब फलों को तुरंत तोड़कर नष्ट कर दें।

अधिक संक्रमण की स्थिति में 0.1 प्रतिशत मैलाथियान या 0.1ब थायोडान 15 दिन के अंतराल पर छिड़के। इसी प्रकार से किसान भाई मिर्च की रोपाई भी इसी माह में करते हैं। उन्होंने बताया कि सर्दियों में 10 से 17 दिन बाद हल्की सिंचाई करते रहें। जिससे फूल फल नहीं गिरते हैं वह फसल पाले से भी बच जाती है। डॉ सिंह ने बताया कि जनवरी माह में

प्याज की रोपाई भी करते हैं किसान भाई उचित मात्रा में उर्वरक का प्रयोग करें तथा ध्यान रहे की रोपाई सायंकाल के समय करना उचित रहता है।रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें। उन्होंने बताया की मूली और गाजर जनवरी से फरवरी तक किसान भाई लगा सकते हैं यह फसल 40 से 70 दिन में तैयार हो जाती है इसके लिए जापानी व्हाइट मूली की प्रजाति अच्छी होती है। मूली गाजर को तैयार होने पर उखाड़ने से 2 से 3 दिन पहले हल्की सिंचाई करें इन फसलों को उखाड़ने में देर न करें। क्योंकि देर से इनकी गुणवत्ता खराब हो जाती है तथा मूल्य भी कम मिलता है। इसी प्रकार से किसान भाई राजमा की भी बुवाई कर सकते हैं राजमा की बुवाई के लिए 120 से लेकर के 140 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि राजमा की उन्नत प्रजातियां जैसे अंबर, पीडीआर 14, मालवीय 15, मालवीय 137 उचित है। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी है कि इन फसलों की रोपाई एवं बुवाई करके किसान भाई अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं।